भूमिका

आदरणीय पाठको,

'मानव-धर्म-प्रशिक्षण-संस्थान' की ओर से ***"मानव-धर्म-का-विज्ञान"*** विषय पर पुस्तक के प्रकाशन से हमें अति हर्ष हो रहा है। हमारी संस्था 'मानव-धर्म' प्रशिक्षण कार्यक्रम' को पिछले तीन वर्षों से भी अधिक समय से स्कूली बच्चों को धर्म की वैज्ञानिक शिक्षा देने हेतु ***'बाल शिविर'*** के माध्यम से चलाती आ रही है। संस्था के निदेशक ***'डॉ० तन्मय'*** ने इस दिशा में पहल की और हमारी संस्था की विधिवत् स्थापना 6 अक्टूबर 2002 को एक भव्य कार्यक्रम द्वारा हुई। इस कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय दिनेश चन्द्र जी त्यागी, अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में अनेक गणमान्य एवं विद्वान अतिथियों ने पधार कर अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

1. **पुस्तक का प्रकाशन क्यों ? :-** आज विश्व में धर्म के मूल में छिपे उद्देश्यों की वैज्ञानिक समझ के अभाव में पनपते अन्धविश्वासों से उत्पन्न कट्टरता के कारण सैकड़ों वर्षों से अनेक युद्ध हो चुके हैं और युद्ध जैसी स्थिति अभी भी बराबर बनी हुई है। आज विज्ञान का युग है, विश्व भर में लोगों की सोच में विज्ञान के माध्यम से बदलाव आ रहा है। वे धीरे-धीरे संकीर्णता से ऊपर उठकर बड़े दायरे में सोचने को विवश हैं। यह एक शुभ लक्षण है। अतएव हमारी संस्था ने समयानुकूल धर्म पर वैज्ञानिक कार्यक्रम तैयार किया, जिसका नाम है ***"ज्ञान-विज्ञान कार्यक्रम"***।

2. **'ज्ञान-विज्ञान कार्यक्रम' से लाभ की आशा :-** आशा है कि यह कार्यक्रम विज्ञान में दीक्षित हो रही आज की पीढ़ी को रुचिकर लगेगा। इससे धर्म के सम्बन्ध में देश व विश्व समाज तक में उन्नत किस्म की समझ का प्रचार-प्रसार होगा। ***'अद्वैत'*** विचारधारा, जो पूर्ण रूप से विज्ञानसम्मत है और उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता के उद्घोष पर आधारित है, आज के वैज्ञानिक समाज में स्वागत योग्य समझी जायेगी।

   इस ***'ज्ञान-विज्ञान'*** कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार से भारतीय समाज में फैले अनेकानेक सम्प्रदायों में आपसी समझ और सामंजस्य बढ़ेगा और अनेक प्रकार के भ्रम नष्ट होंगे। अंधविश्वासों पर आधारित मान्यताओं का मकड़जाल टूटेगा और एक उच्चतर समाज की स्थापना का श्रीगणेश होगा। ***विश्व में अमन और शान्ति की स्थायी बहाली होगी।*** यह ठीक है, कि इस विचारधारा को प्रारम्भ में बहुत थोड़े लोग समझ पायेंगे, परन्तु धीरे-धीरे पूरा विश्व, आज नहीं तो कल, अवश्य समझेगा। ***इस विचारधारा की विजय निश्चित है, क्योंकि इसमें सम्पूर्णता को समझने का प्रयास है, अहिंसा इसकी नींव है और धर्म के सभी गुण इसमें मौजूद हैं।*** इस ***"ज्ञान-विज्ञान"*** कार्यक्रम की लेखन-सामग्री को चार बड़े-बड़े गुरुजनों के लेखों और उपदेशों से संकलित किया गया है। हमारी संस्था को आशा है, कि हम एक न एक दिन अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे।

3. **मानव धर्म पर भारतीय खोज :-** परमात्मा ने इस सृष्टि का सृजन किया और मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया, एवम् उसे सर्वोच्च बुद्धि प्रदान की। आज मानव, ईश्वर द्वारा बनायी गयी हर वस्तु की जाँच पड़ताल कर सकता है और तो और परमात्मा के बारे में भी वह जानने का पूरा-पूरा प्रयास कर रहा है। हर्ष का विषय है, कि ऐसी खोज भूतकाल में भारत के मनीषियों ने कहीं अधिक विस्तारपूर्वक कर रखी है। आज का विज्ञान उन पूर्वकालिक भारतीय खोजों की क्रमशः पुष्टि ही करता जा रहा है। हमारे निदेशक महोदय ने भारतीय धर्म एवं संस्कृति पर की गयी पूर्वकालिक खोजों का आधुनिक विज्ञान की भाषा में कुल नौ सत्रों में खुलासा करने का भरपूर प्रयास किया है।

4. **मानव धर्म की विशेषतायें एवम् स्वरूप :-** ***'मानव धर्म'*** पूरी तरह से प्रकृति के शाश्वत सिद्धान्तों तथा ***'संस्कृति'*** - प्रकृति के व्यवहार पर आधारित है। इन दोनों पक्षों को क्रमशः दूसरे सत्र के आरम्भ से नवम् सत्र तक स्पष्ट किया गया है, जबकि पहले सत्र में मानव धर्म की विशेषताओं पर चर्चा की गयी है। जैसे - 1. ईश्वर की अवधारणा 2. लम्बे समय में एक बड़े समूह द्वारा ईश्वरीय ज्ञान की खोज 3. मुख्य प्राकृतिक सिद्धान्तों का वर्णन, जिनके आधार पर प्रकृति कार्य करती है 4. प्रतीक पूजा 5. बहुदेववाद 6. उपदेश देने की उन्नत विधि आदि। और भी मुख्य बातें है--(i) धर्म के सम्बन्ध में विश्लेषणात्मक, व्यापक एवम् सम्पूर्णता की सोच (ii) आधुनिक विज्ञान एवम् भारतीय आत्म-विज्ञान सम्बन्धी तुलनात्मक अध्ययन की चर्चा (iii) आत्मा एवम् जीवात्मा के भेद, (iv) प्राकृतिक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक विश्लेषण (v) प्रतीकों की अवधारणा का विज्ञान पक्ष एवं (vi) आध्यात्मिक चिन्तन पर लिखे गये विशाल साहित्य की संक्षिप्त चर्चा इसमें शामिल है।

5. **मानव संस्कृति के अर्थ :-** ***'संस्कृति'*** क्या है और उसके विभिन्न क्षेत्रों में फैले स्वरूप, जैसे 'तीर्थों एवम् मन्दिरों की स्थापना, पर्वों एवम् उत्सवों' का अर्थ, 'ज्योतिष', 'संगीत', 'नृत्य', 'वास्तु', 'स्थापत्यकलाओं' आदि पर संक्षिप्त चर्चा की गयी है। 'प्रतीकोपासना का विकास', 'ब्रह्मचर्य व्रत', 'वैराग्य', 'सती व्रत' की अवधारणा आदि की वैज्ञानिक समझ प्रदान करने का प्रयास किया गया है। 'चार पुरुषार्थ', 'वर्ण', 'आश्रम एवम् संस्कार' व्यवस्था द्वारा मानव जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग दर्शाया गया है। 'भक्ति', 'ज्ञान', 'निष्कामकर्म' आदि छह मुख्य मार्गों द्वारा परमात्मा तक पहुँचने की वैज्ञानिक समझ पर स्पष्टीकरण दिए गये हैं। सृजन, पालन एवम् संहार, कालनिर्णय, वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों एवम् दर्शन शास्त्रों की संक्षिप्त जानकारी दी गयी है। इतिहास ग्रंथों द्वारा दिये गये संदेश एवम् उनके लेखन के उद्देश्यों पर विस्तृत चर्चा है। ***'सूक्ष्मता के सिद्धान्त'*** एवं ***'होम्योपैथी'*** के सम्बन्ध में कुछ विशेष जानकारी उपलब्ध करायी गयी है।

6. **सूक्ष्म संसार :-** ***'विराट्'*** के अद्भुत संसार की चर्चा, सप्तम् सत्र का मुख्य आकर्षण है। इस चर्चा में विराट् के सूक्ष्म संसार को आधुनिक विज्ञान कहाँ तक खोज पाया है और भारतीय मनीषियों की खोज कितनी आगे है, इसका तुलनात्मक ब्यौरा दिया गया है। अन्त में सभी सत्रों का सारांश एवं परमात्मा को प्राप्त करने के सरल उपाय तथा गुरु द्वारा ***'अन्तिम उपदेश'*** और भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया संदेश

"सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज.....मा शुचः" तथा परमात्मा से भक्त की अन्तिम ***'अरदास'*** भी लिखी गयी है। मेरे विचार से इस पुस्तक की शोध सामग्री को यदि ध्यान से अध्ययन किया जाये, तो लगता है, कि ***'विज्ञान की भाषा में लिखा गया यह एक धर्म ग्रंथ ही है'।*** ईश्वर करे, इन विचारों की उत्तरोत्तर वृद्धि हो, ताकि पूरा का पूरा भूमण्डल इन विचारों से सराबोर हो जाए। अस्तु !

7. **नयी पीढ़ी के प्रश्न :-** नयी पीढ़ी के मनों में उठने वाले तमाम प्रश्नों के उत्तर इस पुस्तक में ढूँढ़े जा सकते हैं, जैसे - भारी भरकम पेट एवं हाथी की सूँड़ वाले ***'श्री गणेश जी'*** चूहे पर सवारी कैसे कर सकते हैं ? चार मुँह वाले ***'ब्रह्मा जी'***, जो ***'विष्णु जी'*** की नाभि से उत्पन्न हुए हैं, का क्या अर्थ है? दस सिर वाला तथा बीस भुजाओं वाला रावण, करवट से कैसे सोता होगा? आदि।

8. **प्रार्थना :- 'वैदिक-धर्म'** में सदैव से लचीलेपन का गुण रहा है, अतएव इस ***'प्राकृतिक धर्म'*** में युगानुकूल परिवर्तन किए जाते रहे हैं। त्रेतायुग में ऋषि विश्वामित्र ने ***'निर्गुण'*** ब्रह्म की उपासना के स्थान पर ***'सगुण'*** ब्रह्म की उपासना का मार्ग प्रशस्त किया। ऋषि वेदव्यास ने द्वापर युग की आवश्यकतानुसार श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से ***'निष्काम कर्मयोग'*** की एवम् कलियुग की लोक क्षमतानुसार ***'दान'*** के साथ-साथ पौराणिक कथाओं को लिखकर ***'भक्तियोग'*** का प्रतिपादन किया। आज से लगभग 400 (चार सौ) वर्ष पूर्व गुरु गोविन्द सिंह जी ने वैदिक धर्म का सहज काव्यात्मक रूप से संक्षिप्तीकरण कर दिया और इस प्रकार गुरु ग्रंथसाहब की रचना करके ***'प्राकृतिक-धर्म'*** की रक्षा की। आज पूरा वैदिक समाज कई कारणों से अनेक टुकड़ों में बँटा हुआ है। उसको इकट्ठा करने में गुरुओं की अहम भूमिका है, अतएव मेरी ईश्वर से प्रार्थना है, कि वे आज के गुरु समाज को ऐसी प्रेरणा प्रदान करें, कि सभी गुरुजन मिलकर नयी पीढ़ी की रुचि के अनुरूप उनके, मार्ग दर्शन हेतु विज्ञान की भाषा में वैदिक धर्म के आधार पर धर्म पुस्तकों का पुनर्लेखन करें, जिससे पूरा विश्व एकता के सूत्र में बँध जाए और विधर्मियों द्वारा समाज पर दिन-प्रतिदिन हो रहे अत्याचारों से महान ***'मानव-धर्म'*** एवम् ***'संस्कृति'*** की रक्षा हो सके।

9. **अपील :-** ***'मानव धर्म प्रशिक्षण संस्थान'*** की ओर से मैं विनम्रतापूर्वक विश्व के सम्पूर्ण वैज्ञानिक समाज से अपील करती हूँ, कि वे भावनाओं से ऊपर उठकर धर्म के ग़लत अर्थों की समझ के कारण विश्व में जो रक्त-पात हो रहा है, उसे तत्काल बन्द कराने हेतु ***'धर्म' के मूल उद्देश्यों पर खुली बहस कराएं*** और जो विज्ञान सम्मत सिद्ध हो, उसे ही मान्यता प्रदान करें। ***मानवता की रक्षा का भार आज आप लोगों के कंधों पर है। मेरा विश्वास है, कि आप सभी मिलकर बखूबी उसका निर्वहन करेंगे।***

धन्यवाद ! शुभम् भूयात् !

परमजीत कौर

(परमजीत कौर)
M.Sc., M.Ed.
(महासचिवा)